मध्य रेल

रेल सुरभि

मुख्यालय राजभाषा विभाग की त्रैमासिक गृह पत्रिका

अंक - 36

मुख्यालय, राजभाषा विभाग, मध्य रेल, छशिमट, मुंबई

कैलेंडर 2024

दिनांक					माह						
					जनवरी अप्रैल जुलाई	अक्तूबर	मई	फरवरी अगस्त	मार्च नवंबर	जून	सितंबर दिसंबर
1	8	15	22	29	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
2	9	16	23	30	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम
3	10	17	24	31	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल
4	11	18	25		गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध
5	12	19	26		शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु
6	13	20	27		शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
7	14	21	28		रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

सार्वजनिक अवकाश

26 जनवरी, शुक्रवार	गणतंत्र दिवस	17 जून, सोमवार	ईद-उल-जुहा
		15 अगस्त,गुरुवार	स्वतंत्रता दिवस
19 फरवरी, सोमवार	छत्रपति शिवाजी महाराज जयंती	19 अगस्त,सोमवार	रक्षा बंधन
25 मार्च, सोमवार	होली (धुलिवंदन)	02 अक्तूबर,बुधवार	महात्मा गांधी जन्मदिवस
29 मार्च , शुक्रवार	गुड फ्राइडे	31 अक्तूबर,गुरुवार	नरक चतुर्दशी
9 अप्रैल,मंगलवार	गुड़ी पड़वा	01 नवंबर,शुक्रवार	लक्ष्मी पूजन
11 अप्रैल गुरुवार	ईद-उल-फितर	15 नवंबर, शुक्रवार	गुरु नानक जयंती
01 मई , बुधवार	महाराष्ट्र दिवस	25 दिसंबर, बुधवार	क्रिसमस
23 मई, गुरुवार	बुद्ध पूर्णिमा		

रेल सुरभि

अंक 36

अक्तूबर-दिसंबर 2023

-:संरक्षक:-

राम करन यादव
महाप्रबंधक

-:मार्गदर्शक:-

रेणू शर्मा
प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी
एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी

-: प्रधान संपादक:-
मनीष सिंह
उप मुख्य कार्मिक अधिकारी
तथा उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

-:संपादक :-
दीपा मंद्यान
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय)

-:सहयोग:-
राकेश पांडे, कनिष्ठ अनुवादक
डॉ. वीरेंद्रसिंह राव ,कनिष्ठ अनुवादक
देविना चौकसे, कनिष्ठ अनुवादक
रामेश्वर राठौर, कनिष्ठ आशुलिपिक

-:संपर्क का पता:-
महाप्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग
नया प्रशासनिक भवन, मध्य रेल, मुंबई छशिमट
फोन 54753 :/54752/54754 (रेलवे)
022-22697123 (एमटीएनएल)
ई : मेल-dgmol12@gmail.com

विशेष -:पत्रिका में प्रकाशित सभी विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। उन्हें भारत सरकार या रेल मंत्रालय के विचार न समझा जाए । रचनाकार अपनी रचना की मौलिकता के लिए स्वयं जिम्मेदार है।

-अनुक्रमणिका-

क्र.	रचना का नाम	विधा	रचनाकार (सर्वश्री/श्रीमती)	पृष्ठ सं.
1	डॉ.हरिवंशराय बच्चन	संकलन	संपादक मंडल	07
2	अनुबंध	कविता	स्वर्णलता छेनिया	08
3	'सीड मदर' पद्मश्री राही बाई सोम पोपरे	लेख	नरेन्द्र गणपतराव नायटे	09
4	दिशा बदल जाए तो गजब हो जाए	लघु कथा	बी.एस. राजपूत	11
5	बदल रहा परिवेश देश का	कविता	डॉ रामस्वरूप साहू 'स्वरूप	12
6	हिंदी के लिए गूगल की एक अप्रतिम देन: गूगल लेंस	लेख	धर्मेंद्र प्रसाद तिवारी	13
7	हिंदी समितियां	साभार	संपादक मंडल	16
8	मैं हूँ फकीर	कविता	रजनीश दुबे	18
9	हर इंसान यहाँ परेशान है	कविता	विमलेश चन्द्र	20
10	ईश्वरचंद विद्यासागर	संकलन	संपादक मंडल	21
11	जब हम सत्ता में आएँगे	कविता	हिमांशु बावनकर	22
12	बिदाई की दहलीज़	कविता	विमी घनेलू	23
13	किताबें	साभार	गुलज़ार	25
14	डॉ. धर्मवीर भारती	लेख	दीपा मंद्यान	27
15	गीत की कहानी और कहानी का गीत यानि कि काली औरत का ख़्वाब	पुस्तक समीक्षा	विपिन पवार	29

मराठी खंड

16	अखेर कमाई	कविता	कुसुमाग्रज	32
17	पावुल पुढे टाकु की मागे?	कविता	अंजली महेश तेरवेणकर	33

महाप्रबंधक का संदेश

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा विभाग द्वारा विगत वर्षों से निरंतर रेल सुरभि का ई प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी के विकास में निश्चित रूप से इन पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पत्रिकाएं हमारे भीतर सृजनात्मकता एवं लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न करने में सहायक होती हैं। इससे न केवल रचनात्मक प्रतिभा में निखार आता है अपितु हमारी भाषा और शब्द भंडार भी समृद्ध होता है।

कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात किए गए निरीक्षण और दौरों में रेल कर्मियों का कामकाज देख हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अधिकतर कार्य हिंदी में किया जा रहा है। महाराष्ट्र राज्य'ख' क्षेत्र में होने के बाद भी हिंदी में हो रहे कार्य को देखकर यह विश्वास बढ़ता है कि हम वाकई राजभाषा युक्त हो रहे हैं। मध्य रेल के कई अधिकारियों को रेलवे बोर्ड स्तर पर हिंदी में कार्य करने के लिए पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं।

मेरा सभी अधिकारियों से निवेदन है कि वह स्वयं भी हिंदी में कार्य करें और अपने अधीन कर्मचारियों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करें।

केंद्रीय सरकार के कर्मचारी होने के कारण हम सभी का यह दायित्व है कि हम हिंदी का प्रयोग प्रसार बढ़ाएं।

साथ ही रेल सुरभि के लिए संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

राम करन यादव
महाप्रबंधक, मध्य रेल

मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश

मुख्यालय राजभाषा विभाग की गृह पत्रिका रेल सुरभि का विविध रचनाओं से परिपूर्ण मुख्यालय राजभाषा विभाग की गृह पत्रिका रेल सुरभि का विविध रचनाओं से परिपूर्ण अंक 36 आपके समक्ष प्रस्तुत है। विगत वर्षों से इस डिजिटल युग में रेल सुरभि का ई-प्रकाशन हो रहा है जो पेपर लैस प्रणाली को साकार कर रहा है।अपनी रचनाएँ हमें भेजने के लिए आप सभी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूं।

हमारे नए महाप्रबंधक ने क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन की बैठक में पिछले अंक के विमोचन के साथ जब पत्रिका देखी तो रेल सुरभि की प्रशंसा करते हुए सभी लेखकों की भी सराहना की और अन्य उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों को लेखन के लिए प्रोत्साहित भी किया। रेल सुरभि का हर अंक मध्य रेल की वेबसाइट पर अपलोड किया जाता है जिसके कारण रेल सुरभि देश के कोने-कोने तक पहुंचती है ऐसे में मध्य रेल का प्रतिनिधित्व करती इस पत्रिका का स्तरीय होना आवश्यक है और हमारे लिए यह हर्ष की बात है कि सभी अधिकारियों और कर्मचारियों व उनके परिवार के सदस्यों द्वारा भेजी गई रचनाएँ उच्च स्तर की रही है।

रेल सुरभि के माध्यम से हम राजभाषा के प्रयोग प्रसार को बढ़ावा देने का भरपूर प्रयास करते हैं और इसके माध्यम से पाठक व रचनाकार न केवल हिंदी के निकट आते हैं अपितु अपने विचारों को व्यक्त करके कल्पनाशीलता को रचनाओं के रूप में परिवर्तित करते हैं।आप यूहीं निरंतर हमें अपनी रचनाएँ भेजते रहें पत्रिका का सफल प्रकाशन आप सभी के प्रयास के परिणाम से ही हो रहा है।

शुभकामनाओं सहित।

(रेणू शर्मा)
प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी
एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी

प्रधान संपादक की कलम से

मैं उप महाप्रबंधक (राजभाषा) के रूप में रेल सुरभि पत्रिका के प्रधान संपादक की भूमिका में पहली बार आपके समक्ष उपस्थित हूं। यह मेरे लिए हर्ष और गौरव का विषय है की उप मुख्य कार्मिक अधिकारी के पद पर रहते हुए मुझे उपमहाप्रबंधक (राजभाषा) का अतिरिक्त प्रभार ग्रहण करने का मौका मिला और हिंदी के प्रयोग प्रसार में सहभागी बना।

रेल सुरभि के हर अंक में आप पाठकों के द्वारा भेजी गई रचनाओं को पढ़कर बड़ा आनंद आता है। हिंदी में पठन-पाठन में मेरी रुचि पहले से ही थी अब और गहरी हो रही है। अच्छी पुस्तक जीवंत देव प्रतिमा के समान हैं, उनकी आराधना से तत्काल ही प्रकाश और मार्गदर्शन मिलता है। अच्छी किताबें पढ़ना हमारे अंतर्मन में विचार करने की आदत व अवलोकन की क्षमता को बढ़ाता है जो कि हमारे व्यक्तित्व को निखारने में सहायक होता है। अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर में रेल सुरभि हेतु भेजी गई आपकी रचनाओं को अवश्य पढ़ता हूं एवं चिंतन करता हूं। आपके द्वारा भेजी गईं सभी रचनाएं सराहनीय होती हैं और हमारा प्रयास यही रहता है कि सभी की रचनाओं को रेल सुरभि में स्थान देने का प्रयास करते हैं।

रेल सुरभि के सभी पाठकों व रचनाकारों से मेरा निवेदन है कि अपने साथियों को भी लेखन हेतु प्रेरित करें और अगले अंक के लिए हमें अपनी रचनाएं भेजें।हमें आपकी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं सहित।

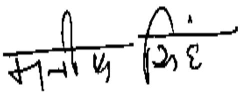

मनीष सिंह
उप मुख्य कार्मिक अधिकारी
एवं उप महाप्रबंधक अतिरिक्त प्रभार (राजभाषा)

संपादकीय

विभिन्न विधाओं की रचनाओं से परिपूर्ण रेल सुरभि का नवीनतम अंक-36 आपके सम्मुख है। पिछले हर अंक की तरह इस अंक को भी अपने सफल बनाने में अपना भरपूर सहयोग दिया। आपके द्वारा भेजी गई रचनाओं का हम बेसब्री से इंतजार करते हैं। हमारा प्रयास रहता है कि पत्रिका में आप सभी की रचनाओं को स्थान दें और पत्रिका के जरिये हम सभी अपने एक-दूसरे को जान सकें।

मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि लेखन की कला बड़ी जटिल होती है। यह कला चारों भाषा कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) में सबसे अंतिम चरण है। लिखना भावों एवं विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। सृजनशीलता: रचनात्मक लेखन के माध्यम से लेखक नए और अद्वितीय विचारों,प्रतिभा और सृजनशीलता को प्रकट करता है. वे शब्द, वाक्य, और अनुच्छेदों के माध्यम से अपनी कल्पना को जीवंत करते हैं। इसका उद्देश्य अपने स्वयं के जीवन और अनुभवों को व्यक्त या प्रतिबिंबित करना भी है। एक लेखक अच्छी लेखन क्षमता के जरिए अपनी बात को लोगो को आसानी से समझा सकते हैं। अच्छे लेखन के लिए अच्छे विचार होने चाहिए, जिस विषय पर लिख रहे है उसकी अच्छी जानकारी होनी चाहिए। अगर आप लिखने का निश्चय करेंगे तो आपका मस्तिष्क स्वयं ही सक्रिय और क्रियात्मक हो जाएगा।

अतएव आप सभी से यही कहूंगी कि लेखन कभी ना छोड़े और अगर आप नहीं लिखते हैं तो आज ही कलम उठाएं और शुरुआत करें व हमें अवश्य भेजें। साथ ही इस पत्रिका के लिए आपके सुझावों की भी प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद

(दीपा मंदयान)
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय)

तू न थकेगा कभी, तू न रुकेगा कभी – डॉ हरिवंशराय बच्चन

-संकलन

"यह महान दृश्य है,चल रहा मनुष्य है,अश्रु श्वेत रक्त से,
लथपथ लथपथ लथपथ,अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ"

शब्दों का ऐसा ताना-बाना जो पाठक और श्रोता दोनों के ही मन को उत्साह, उम्मीद, आत्मबल, और विश्वास से लबरेज कर आत्मावलंबन भर दे, यह कोई सरल कार्य नहीं। डॉ हरिवंश राय बच्चन 20वी सदी में भारत के सर्वाधिक प्रशिक्षित हिंदी भाषी कवियों में से एक थे।उन्होंने कायस्थ पाठशाला में पहले उर्दू और फिर हिंदी की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम°ए° और कैंब्रिज विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य के विख्यात कवि डब्ल्यू. बी. यीट्स की कविताओं पर शोध कर पी.एच.डी. पूरी की थी ।

उनकी कविता-यात्रा बचपन से ही शुरू हो गई थी और स्कूली दिनों से तुकबंदियाँ करने लगे थे। 1933 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में हुए कवि-सम्मेलन में उनके द्वारा 'मधुशाला' के पाठ को श्रोताओं ने ख़ूब पसंद किया और धीरे-धीरे उनकी मंचीय ख्याति इतनी बढ़ गई कि प्रेमचंद ने भी एक बार कहा कि मद्रास में भी यदि कोई किसी हिंदी कवि का नाम जानता है तो वह बच्चन का नाम है। उनका संग्रह 'मधुशाला' उनकी स्थायी लोकप्रियता और प्रसिद्धि का कारण बना। बच्चन मधुशाला का पर्याय ही बन गए। इन दोनों काव्य-संग्रहों के अतिरिक्त उनके दो दर्जन से अधिक अन्य संग्रह प्रकाशित हुए। कविताओं के अलावा उनकी आत्मकथाएँ और उनके अनुवाद भी हिंदी में उनकी स्थायी यशःकीर्ति का कारण हैं। उन्होंने बाल-साहित्य और निबंध लेखन भी किया। उनकी कृति 'दो चट्टानें' को 1968 में हिंदी कविता के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इसी वर्ष उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार तथा एफ्रो एशियाई सम्मेलन के कमल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। बिड़ला फाउंडेशन ने उनकी आत्मकथा के लिए उन्हें सरस्वती सम्मान दिया था। बच्चन को भारत सरकार द्वारा 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

अपने पिता के गौरव को बरकरार रखते हुए जाने माने फिल्म अभिनेता और पुत्र अमिताभ बच्चन लिखते हैं कि- " मैं यह नहीं कह सकता कि मुझे उनकी सभी कविताएं पूरी तरह समझ में आ जाती हैं। पर यह जरूर है कि उस वातावरण में रहते-रहते, उनकी कविताएं बार-बार सुनते-सुनते, उनकी जो धुनें हैं, उनके जो बोल हैं, वह अब जब भी पढ़ता हूँ तो बिना किसी कष्ट के ऐसा लगता है की यह मैं सदियों से सुनता आ रहा हूँ, और मुझे उस कविता की धुन गाने या बोलने में कोई तकलीफ़ नहीं होती। मैंने कभी बैठकर उनकी कवितायेँ रटी नहीं हैं। वह तो ऑटोमैटिक मेरे अंदर से निकल पड़ती हैं।"

27 नवंबर को डॉ हरिवंशराय बच्चन की 166वीं जन्म वर्षगांठ पर शत शत नमन।

अनुबंध

-स्वर्णलता छेनिया

कोई अनुबंध नहीं है
तुम्हारे और मेरे बीच,

कोई स्वार्थ नहीं है
तुम्हारे और मेरे बीच,

फिर भी जुड़े हैं हम तुम
उन अव्यक्त तरंगों से,

जो कि जाग उठती हैं
तुम्हारे और मेरे बीच,

कोई मोल नहीं किया,
कभी गहराई नहीं मापी,

बस रिश्ते की गर्माहट
बताती है ये जुड़ाव,

बिना किसी कसम के
बिना किसी हलचल के,

समय की नदी बहती है
तुम्हारे और मेरे बीच

गुजरते पलों के साथ-साथ,

बंधते जा रहे
सिमटते जा रहे शून्य में,

जबकि कोई अनुबंध नहीं
तुम्हारे और मेरे बीच.....

अध्यापिका,
इटारसी

‘सीड मदर’ पद्मश्री राही बाई सोम पोपरे

-नरेन्द्र गणपतराव नायटे

एक आदिवासी निरक्षर औरत राही बाई की यह कहानी है। राही बाई महाराष्ट्र केअहमदनगर जिला के अकोले तहसील के अति दुर्गम कोंभालणे ग्राम की रहने वाली है। यह है उनका परिचय परंतु बाद का परिचय देने के शुरूआत की तो राही बाई को निरक्षर कहने को कोई भी राजी नही होगा। ऐसा है उनका कर्तव्य। तो क्या किया इस सामान्य औरत ने? आश्चर्य होता है उनके बारे में सुनकर, उनके असामान्य कर्तव्य के लिए उनको नमन करने का मन होता है। आज हमे जो सब्जियाँ मिलती है उन बीजों का उत्पादन अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किया जाता है। यह संकरित,हायब्रिड बीज है एवं उत्पादन अधिक होने की वजह से किसानों द्वारा इन बीजों का प्रयोग किया जाता है।

राही बाई के पास सभी प्रकार की पुराने देसी पत्तेदार सब्जियों, लता प्रकार की सब्जियों के बीज जतन किए गए है। यह बीज कोई भी अंतर्राष्ट्रीय सीड कंपनी के पास भी उपलब्ध नही है। राही बाई के पास जो बीज है वह सौ साल पहले अपने पूर्वज उपयोग में लाते थे, वह मूल स्वरूप में है। उनके पास सिर्फ लता प्रकार सब्जियों के तीस प्रकार उपलब्ध हैं। उन्होंने तीन हजार महिलाओं एवं किसानों का बचतगट बनाया है। राही बाई इन सब्जियों की संपूर्ण सेंद्रिय तरीके से खेती कर उनके बीजों को सुखाकर अलग अलग करके मिट्टी के घड़े में संरक्षित करती है। यह बीज पारंपारिक, नैसर्गिक रूप में कोई भी कंपनी के पास नही है।बीबीसी की 2018 के 100 महिलाओं के सूची में राही बाई तीन भारतीयों में से एक थी।

वैज्ञानिक रघुनाथ माशेलकर ने उनके कार्य के लिए उन्हे ‘सीड मदर’ की उपाधि दी है।अहमदनगर की रहने वाली राही बाई पढ़ी-लिखी नहीं है, मगर बावजूद इसके खेती के क्षेत्र में इनके ज्ञान का लोहा वैज्ञानिक भी मानते हैं। राही बाई पारिवारिक ज्ञान और प्राचीन परंपराओं की तकनीकों के साथ जैविक खेती को एक नया आयाम दे रही है। इन्होंने 50 एकड़ से भी ज्यादा भूमि को संरक्षित किया है और उसमें कई किस्म के चावल और सब्जियों की खेती का काम करती हैं। राही बाई का एक सीड बैंक भी है, जिसमें वह बीजों का संरक्षण करती हैं। यह बीज कम सिंचाई में भी किसानों को अच्छी फसल देते हैं।किसान कमर्शियल तौर पर छोड़ देते तो घर में भी देसी बीजों का प्रयोग नही कर रहे है।

आज ऐसी परिस्थिती है कि, इन बीजों की प्रजातियां नष्ट होने के कगार पर है। परंतु राही बाई ने ‘सीड बैंक’ बना कर आदिवासी पंरपरा से 53 अनाज के 114 देसी प्रकार उपलब्ध कराए है।अहमदनगर के अकोले के साथ चार तहसील में 50 प्रतिशत किसान यह देसी बीज का उपयोग करते है। विशेष रूप से हर बीज के बारे में उनको पता है। पूरे देश से कृषि तंत्रज्ञान पढ़ रहे अनेक विद्यार्थी यह प्रोजेक्ट देखने को आते है। पूरे विश्व में यह इस किस्म का अकेला प्रोजेक्ट है। उनको आज तक अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है। उनके इस अतुलनीय कार्य के लिए भारत सरकार द्वारा उन्हे ‘पद्मश्री’ पुरस्कार से नवाजा है।

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर पद्म सम्मान की घोषणा की गई। महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में बदलाव लाकर पूरी दुनिया में मशहूर हो चुकी राही बाई को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने सम्मानित किया। 56 साल की राही बाई सोम पोपरे को यह सम्मान जैविक खेती के क्षेत्र में दिया गया ।कम पानी में अधिक फसल देने वाला बीज बैंक बनाने वाली राही बाई स्कूल नहीं गई लेकिन वैज्ञानिकों ने इनके ज्ञान का लोहा माना। लोग कहते है परंपरागत बीज से फसल कीअधिक उपज नहीं होती लेकिन यह जहरीली फसल की अधिक पैदावार से तो बेहतर है। सीडमदर के नाम से विख्यात राही बाई जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए भी जानी जाती हैं।

नारी शक्ति सम्मान पा चुकीं राही –

राही बाई के उपलब्धियों के सफर की कहानी 20 साल पहले शुरू हुई थी। जब उनका पोता जहरीली सब्जी खाने के बाद बीमार हो गया था। उस पल राही बाई ने जैविक खेती की शुरूआत करने का मन बनाया। बात सिर्फ खेती तक ही सीमित नहीं रही बीजों का ऐसा बैंक तैयार किया जो

किसानों किसानों के लिए बेहद मुफीद साबित हुआ। 56 साल की राही बाई सोम पोपरे आज पारिवारिक ज्ञान और प्राचीन परंपराओं की तकनीकों के साथ जैविक खेती को एक नयाआयाम दे रही है।

सीड मदर के नाम से हैं प्रख्यात -

राही बाई कभी स्कूल नहीं गई लेकिन खेती के क्षेत्र में इनके ज्ञान का लोहा वैज्ञानिक भी मानते हैं। राही बाई ने अपनी मेहनत से बीजों का बैंक तैयार किया है। यहाँ के बीज कम सिंचाई में भी किसानों को अच्छी फसल देते हैं। राही बाई महाराष्ट्र के अहमदनगर के छोटे सेगांव की रहने वाली हैं जो एक आदिवासी परिवार से ताल्लुक रखती हैं। बीजों को सहेजने का काम पुश्तैनी था और राही ने उसे आगे बढ़ाया और इतिहास रच दिया।

महाराष्ट्र और गुजरात में बीजों की मांग -

वह कहती हैं, 12 साल की उम्र में शादी हुई। कभी स्कूल नहीं जा पाई लेकिन खेती के विज्ञान ने मुझे हमेशा आकर्षित किया। 20 साल पहले मैंने बीजों को इकट्ठा करना शुरू किया था। इन परंपरागत बीजों को सहेजा और बेटे को हायब्रिड, संकरित की जगह देसी बीजों से खेती की सलाह दी। सफर शुरू हुआ, धीरे-धीरे महिलाएं इसमें जुड़ती गईं। बीजों का बैंक बनने पर पड़ोस के गांव ने सम्मानित किया। आज परंपरागत बीजों की मांग महाराष्ट्र और गुजरात में अधिक है। मैं और दूसरी महिलाएं मिलकर परंपरागत तौर पर मिट्टी की मदद से बीजों को सहेजने का काम कर रही हैं।

3500 किसानों संग मिलकर कर रहीं खेती -

राही बाई ने 50 एकड़ से भी ज्यादा भूमि को संरक्षित किया है जिसमें 17 से अधिक फसलों की खेती की जा रही हैं। वह 3500 किसानों के साथ मिलकर काम भी कर रही हैं और उन्हें तकनीक से फसलों की पैदावार बढ़ाने के गुर भी सिखा रही हैं। इसके लिए राष्ट्रपति के हाथों इन्हें नारी शक्ति सम्मान भी मिल चुका है और बीबीसी भी 2018 में 100 शक्तिशाली महिलाओं में शामिल कर चुका हैं।

परंपरागत बीजों को रासायनिक उर्वरकों या कीटनाशकों की जरूरत नहीं -

राही बाई कहती हैं कि जहरीले खानपान के कारण हम लोग आसानी से बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। हम अपनी जरूरत के मुताबिक, फसलों की खेती कर सकते हैं। लोग कहते हैं परंपरागत बीज में फसल की अधिक उपज नहीं ली जा सकती लेकिन मैं कहती हूं यह कम से कम जहरीली फसल की अधिक पैदावार से बेहतर है। हमारे बीजों को किसी तरह के कोई रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों की जरूरत नहीं हैं।कलसुबाई परिसर बियाणे संवर्धन समिति की राही बाई सक्रिय सदस्य है। उन्होंनेकिसानों और विद्यार्थियों को बीजों को चुनने] मिट्टी को उपजाऊ बनाने एवं फसलों पर पेस्टकंट्रोल के गुण सिखाएं।उन्हे चार चरणों के पेडी कल्टीवेशन में महारत हासिल है।

एमआयटीटीआरए की सहायता से उन्होंने अपने यहां पोल्ट्री की शुरूआत की। खेत तालाब एवं परंपरागत जलकुंड की भी उन्होने शुरूआत की है।

पुरस्कार -

1. बीबीसी का 2018 में 100 महिलाएं में पुरस्कृत
2. सर्वोत्कृष्ट बीज संरक्षक पुरस्कार
3. सर्वोत्कृष्ट किसान पुरस्कार – बीएआयएफ
4. नारी शक्ति पुरस्कार 2019
5. पद्म श्री 2020 भारत सरकार

कार्यालय अधीक्षक
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, नागपुर

दिशा बदल जाए तो गजब हो जाए

-बी एस राजपूत

अंगुलीमार पहले नंबर का डाकू था। उसने यह कसम खाई थी कि फोकट में किसी का पैसा नहीं लूंगा। उंगलियां काट काट कर उसकी माला बनाकर वह देवी को रोज चढ़ाया करता था। अगर कोई कहता कि अरे भाई ! पैसे ले ले , पर उंगली क्यों काटता है हमारी ?वह कहता , वाह! फोकट में , दान में नहीं लेता हूं। पहले तेरी उंगली काटूंगा , तो मेरी मेहनत हो जायेगी। फिर उस मेहनत का पैसा ले लूंगा।ऐसे मुफ्त में कैसे ले लूंगा किसी का पैसा ? इस तरह वह रोज एक साथ उंगलियां काट काटकर उसकी माला देवी को पहनाया करता था। कौन ?खूंखार अंगुलीमाल डाकू , लेकिन जब उसने पलटा खाया , तो कैसा जबर्दस्त पलटा खाया आपको मालूम है न?अंगुलीमाल जब तक डाकू था , तो पहले नंबर का और जब संत हो गया , तो उसने हिंदुस्तान से आगे जाकर के सारे के सारे विदेशों में , वो काम किए कि बस तहलका मचा दिया।अपने प्रभाव से दुनिया को बदलते चला गया। ये सब हुआ जब दिशा बदली।

क्षमताएं जिनके अंदर है , प्रतिभा जिसके अंदर होती हैं,वह कहीं से कहीं जा पहुंचता है। आम्रपाली जब तक वैश्या रही , तो पहले नंबर की रही। राजकुमार ,राजाओं से लेकर सेठ साहूकार तक एक निगाह पाने के लिए ढेरों पैसा खर्च कर डालते थे , लेकिन जब उसको अहसास हुआ कि मैं गलत हूं तब आम्रपाली करोड़ों की संपत्ति लेकर भगवान बुद्ध की ओर चली गई ,तो न जाने क्या से क्या हो गई और सम्राट अशोक जो था ऐसा खूनी था कि उसने खानदान के खानदान समाप्त कर दिए थे। सभी शाही खानदानों को उसने मरवा डाला था, लेकिन जब उसने पलटा खाया और जब अपने आप में परिवर्तन कर डाला , तो फिर वह कौन हो गया ? सम्राट अशोक हो गया, जिसने बौद्ध संघ और बौद्ध धर्म का सारे का सारा संचालन किया।।
दिशा बदलने से ही निश्चित रूप से दशा बदलती है।।

जय हिंद जय भारत।।।।
अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।।

स्टेशन प्रबंधक, लोनावला

कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता- मोहन दास करमचंद गांधी

मातृभाषा हिंदी की यथाशक्ति सेवा और भक्ति-आराधना करना हमारा परम कर्तव्य है-
पं. गोविंद नारायण मिश्रा

बदल रहा परिवेश देश का

डॉ रामस्वरूप साहू 'स्वरूप '

बदल रहा परिवेश देश का,
बदले हम परिवेश लिखें,
हम बदलेंगे युग बदलेगा,
ऐसे शुभ संदेश लिखें...

नील झील में कमल खिले हैं,
महत्वाकांक्षी मन मचले हैं,
हाथ बढ़ायें कदम मिलायें,
अब हर हाथ को काम मिले...

जादू की तो छड़ी नहीं है,
पर विकास की घड़ी यही है,
सही सोच संग सही दिशा में,
हम अपना मन मंतव्य रखें...

भ्रष्टाचारी - बेरोजगारी,
सबसे बड़ी हैं ये बीमारी
इनका भी उपचार है संभव,
संकल्पित हर हाथ दिखे...

जो सपने बोये हैं काटेंगे,
सुख दुख हिल मिलकर बांटेंगे,
आस अभिलाष की नई सुबह,
नव लय नव उनमेंश लिखें

सेवानिवृत्त सीटीसी डब्ल्यू
कल्याण(.पू)

हिंदी के लिए गूगल की एक अप्रतिम देन: गूगल लेंस

-धर्मेंद्र प्रसाद तिवारी

बहुत सारे गूढ सत्यों में एक सत्य भी साबित हुआ है कि 'परिवर्तन' एकमात्र शाश्वत हैं। समय के दौड़ते पलों को कैद करना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है, हम अपने पास कुछ यादें ही संजो कर रख पाते हैं और आज के बदलते समय की मांग है ' प्रौद्योगिकी'। हम स्वयं सशक्त होना चाहे तो, राष्ट्र को सशक्त बनाना चाहे तो, हमें प्रौद्योगिकी में अग्रणी होना ही पड़ेगा। आत्मनिर्भर भारत अभियान की आधारशिला ही है प्रौद्योगिकी । आज अगर हम देश को सशक्त बनाना चाहते हैं तो हमें अपने रक्षा क्षेत्र को ऐसी प्रौद्योगिकी से युक्त करना होगा, जिसका किसी राष्ट्र के पास कोई तोड़ न हो।अपने उद्योग क्षेत्र को,अपने शिक्षा क्षेत्र को, प्रौद्योगिकीय आधार पर सभी अग्रणी देशों के समक्ष ला खड़ा करना होगा।

इस सत्य को कोई झुठला नहीं सकता कि आज भविष्य विज्ञान में निहित है। हमें जीवित रहना है तो, अपना अस्तित्व बनाए रखना है तो, अपने जीवन की सार्थकता सिद्ध करनी है तो, हमें विज्ञान से जुड़ना ही होगा।इसी तरह भाषा भी विकास के विभिन्न चरणों से गुजरकर आज प्रौद्योगिकी युग में प्रवेश कर चुकी है। आज जो भाषाएं प्रौद्योगिकी की समर्थ हैं, वही सबल हैं, वही सफल हैं और इस दौड़ में हमारी भारतीय भाषाएं किसी से पीछे नहीं है । हम आज यहाँ हिंदी के डिजिटल सफर की बात करने आए हैं। दिन-प्रतिदिन डिजिटल इंडिया पहल भी हर परिपेक्ष्य में सतत् प्रगति की राह पर है और डिजिटल हिंदी भी । डिजिटल हिंदी के सफर में भारत सरकार के साथ- साथ बहुत सारी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपना बड़ा योगदान दिया हैं, इसलिए नहीं कि उन्होंने भारत पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखी, बल्कि इसलिए कि भारत सभी सकारात्मक संभावनाओं से युक्त देश है। यहाँ के बाजार पर पकड़ बनाने के लिए यहां की भाषाओं पर पकड़ जरूरी है। जिसमें कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली राजभाषा हिंदी भी है। इसी क्रम में गूगल लेंस ने भी हिंदी के डिजिटल सफर को आगे बढ़ाने में काफी योगदान दिया है आइए देखते हैं **गूगल लेंस क्या है और इसमें क्या-क्या सुविधाएं हैं:-**

गूगल लेंस को आमतौर पर एक विश्लेषक के रूप में जाना जाता है जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग का इस्तेमाल करके कैमरे की मदद से आपके आस-पास की सारी जानकारी देता है| पिछले साल तक यह सिर्फ पिक्सल और पिक्सल 2 तक ही सीमित था, लेकिन अब गूगल लेंस की यह विशिष्टताएं, विशेषताएं एंड्रॉयड स्मार्टफोन में भी उपलब्ध हैं।

क्या है गूगल लेंस?

गूगल लेंस गूगल गॉगल्स का अगला वर्ज़न है जिसे 2014 में बंद कर दिया गया था गूगल लेंस की मदद से आप किसी भी प्रोडक्ट को स्केन कर सकते हैं जैसे किसी पौधे का चित्र, आपके आसपास की कोई चीज या फिर कुछ भी और इसका इस्तेमाल करने के लिए आपको बस अपने फोन के कैमरे को उसे चीज पर केंद्रित कर लेंगे उसको क्लिक करना होगा। क्लिक करने के बाद कमरे में दिख रही चीज के बारे में गूगल लेंस आपको पूरी जानकारी दे देगा। जैसे कि यह आपको बता देगा कि यह कौन से प्रकार का फूल है या कौन सा पौधा है, यह जगह कौन सी है या फिर कौन सी सामग्री किया इसके बारे में क्या समीक्षाएँ उपलब्ध हैं। किसी सामग्री को फोन के कैमरे को निर्देशित करके समय, गूगल लेंस बारकोड, क्यू आर कोड लेबल, और टेक्स्ट सामग्री की पहचान करने का प्रयास करेगा, और प्रासंगिक खोज परिणाम, वेब पेज और जानकारी दिखलाएगा।

उदाहरण के लिए, डिवाइस के कैमरे को नेटवर्क नाम और पासवर्ड वाले वाई-फाई लेबल पर इंगित करते समय, यह स्वचालित रूप से स्कैन किए गए वाई-फाई नेटवर्क से कनेक्ट हो जाएगा। लेंस को गूगल- फोटो और गूगल सहायक एप्स लेंस के साथ ही एकीकृत किया गया है। यह सेवा गूगल गॉगल्स के समान ही है जो इसका एक पूर्ण संस्करण ऐप है और समान रूप से कार्य करता है, लेकिन उसकी क्षमताएं कम हैं। लेंस अधिक उन्नत गहन तकनीक का उपयोग करता है। सॉफ्टवेयर एक मेनू पर आइटम को पहचानने और अनुशंसा करने में सक्षम होगा। जिससे हिंदी के डिजिटलाइजेशन का मार्ग प्रशस्त होता है। इसमें पिक्चर टू टेक्स्ट की सुविधा उपलब्ध है। इसमें उस बदले हुए टेक्स्ट को आमंत्रित करने की सुविधा उपलब्ध है। साथ ही इसमें टेक्स्ट टू स्पीच की भी सुविधा उपलब्ध है। हम इन माध्यमों से अनूदित गूगल लेंस का इस्तेमाल कर सकते हैं :-

- गूगल फ़ोटो
- गूगल असिस्टेंट
- गूगल ऐप

लेकिन इन सभी विशिष्टताओं से हटकर इसमें कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो हिंदी को डिजिटल पद पर आगे बढ़ाने में मददगार साबित हो रही हैं और हिंदी में काम करनेवालों के सफर को आसान बना रही हैं। हिंदी में अनुवाद के कार्य को ही गूगल ट्रांसलेट के काफी मदद आज तक सुलझा दिया है और दिन प्रतिदिन इसमें लगातार सुधार हो रहा है। गूगल ट्रांसलेट टेक्स्ट मैटर का अनुवाद कर सकता है। किसी इमेज या स्क्रीनशॉट का नहीं। लेकिन गूगल लेंस किसी भी इमेज स्क्रीनशॉट के कंटेक्ट को टेक्स्ट में परिवर्तित कर सकता है तथा साथ ही इस टेक्स्ट को गूगल ट्रांसलेट की सभी भाषाओं में अनूदित करने का भी विकल्प देता है। इसके लिए निम्नलिखित चरणों का प्रयोग करें:-

1. अपने फ़ोन पर उसे वेबसाइट या एप्लीकेशन पर जाएं जिसके कन्टेंट का अनुवाद करना है।
2. स्क्रीनशॉट लें।
3. गूगल फ़ोटो की एप्लीकेशन खोलें।

4. वह स्क्रीनशॉट को चुनें जिसका अनुवाद करना है। इसके बाद, लेंस के ट्रांसलेट पर टैप करें।

5. इसके बाद ही आपको इमेज या स्क्रीनशॉट का अनुवाद इतनी आसानी से आपके समक्ष उपलब्ध हो जाता है जिसे आप कॉपी कर किसी भी माध्यम से साझा कर सकते हैं।

साथ ही इसमें इमेज को टेक्स्ट में कन्वर्ट करने की भी सुविधा उपलब्ध है। किसी इमेज को स्कैन करते ही यह टैक्स्ट में बदलने का विकल्प प्रदान करता है और टेक्स्ट में बदलने के बाद कॉपी टेक्स्ट का विकल्प भी। अब इस कॉपी किए हुए टेक्स्ट को आप किसी भी मेल या दस्तावेज में पेस्ट कर अपनी मुश्किल आसान बना सकते हैं। किसी इमेज या किसी पीडीएफ का भी स्क्रीनशॉट या तस्वीर खींचकर आप उसे टेक्स्ट में आसानी से परिवर्तित कर सकते हैं। गूगल सर्च ,गूगल ट्रांसलेटर, जी की-बोर्ड, गूगल असिस्टेंट ऐसी और गूगल की सेवा हिंदी में उपलब्ध है आप गूगल असिस्टेंट का इस्तेमाल का हिंदी में कर सकते हैं। 'ओके गूगल' बोलकर आप हिंदी में अपना प्रश्न पूछकर आपको हिंदी में आपका जवाब गूगल असिस्टेंट देता हैं।

अपनी 'गूगल-लेंस' गतिविधि देखने और मिटाने के लिए 'मेरी गतिविधि में 'लेंस' पर पेज पर जाएं अपने खाते मे सेव की जाने वाली सामग्री नियंत्रित करें। अगर आप अपने गूगल- लेंस गतिविधि को अपने गूगल खाते में सेव नहीं करना चाहते हैं तो वेव और एप्लीकेशन गतिविधि को बंद कर गूगल लेंस छवि मान्यता द्वारा विकसित एक प्रौद्योगिकी टूल है, जो वस्तुओं से संबंधित प्रासंगिक जानकारी तंत्रिका नेटवर्क के आधार पर दृश्य विश्लेषण का उपयोग करके देता है। इसे पहले एक स्टैंड अलोन ऐप के रूप में जारी किया गया था, बाद में इसे एंड्रॉइड के मानक कैमरा ऐप में एकीकृत किया गया। इसका प्रारंभिक रिलीज़ 4 अक्टूबर 2017 को किया गया और यह एंड्रॉयड और आईओएस दोनों पर ही काम करता है|

हमें अगर तीव्र गति से आगे बढ़ना है तो हमें अपनी भाषा को साथ में लेकर चलना होगा। आज की तारीख में भाषायी क्षेत्र में हो रही प्रगति को देखते हुए हमें यह मान लेना चाहिए कि हमारी भाषाएं प्रौद्योगिकी सक्षम हैं। अगर हमें इसकी जानकारी नहीं है तो हम में कमी है हमारी भाषाओं में नहीं।

वरिष्ठ अनुवादक
मुख्यालय

"खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है,
जीवन नाम है, आगे बढ़ते रहने की लगन का।"

- मुंशी प्रेमचंद

हिंदी समितियां

संकलन

केंद्रीय हिंदी समिति

यह शीर्षस्थ समिति है, जो नीति निर्धारण में बड़े स्तर पर मार्गदर्शन उपलब्ध कराती है और राजभाषा नीति को लागू करने के लिए अंतर्मन्त्रालयीय और अंतर्विभागीय समन्वय सुनिश्चित करते हुए नीतिगत विषय से संबंधित निर्णयों के कार्यान्वयन का पर्यवेक्षण करती है। भारत के गृह मंत्री इस समिति के उपाध्यक्ष हैं और गृह राज्य मंत्री इसके सदस्य हैं।इस समिति में कुल 41 सदस्य हैं, जिनमें छह मंत्रालयों- विदेश मंत्रालय, मानव संसाधन मंत्रालय, संचार और सूचना प्रौद्योगिक मंत्रालय, रेलवे मंत्रालय, सूचना प्रसारण मंत्रालय तथा कार्मिक, जन शिकायत और पेंशन विभाग के मंत्री शामिल हैं।

हिंदी सलाहकार समिति

यह समिति सभी मंत्रालय में गठित की जाती है तथा उसे मंत्रालय के मंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं और सभी वरिष्ठ अधिकारी सदस्य होते हैं । राजभाषा विभाग के सर्वोच्च अधिकारी इसके सचिव होते हैं। इस समिति में संबंधित मंत्रालय के मंत्री और राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा गैर सरकारी सदस्य भी नामित किये जाते हैं। इस समिति की वर्ष में दो बार बैठकें होती हैं जिनमें अपने मंत्रालय में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को बढ़ाने के लिए निर्णय लिए जाते हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

जिन शहरों में 10 या इससे अधिक केंद्रीय सरकार के कार्यालय होते हैं वहां उन सभी कार्यालय में राजभाषा नीति के प्रचार प्रसार के लिए राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के गठन को मान्यता प्रदान की जाती है केंद्रीय सरकार के कार्यालय के सबसे वरिष्ठ अधिकारी इस समिति के अध्यक्ष होते हैं तथा दूसरे सभी कार्यायलयों के प्रमुख इस समिति के सदस्य होते हैं इस समिति की वर्ष में दो बार बैठकें होती हैं जिनके लिए राजभाषा विभाग से आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है तथा सदस्य कार्यालय भी आपस में निधि की व्यवस्था कर सकते हैं।

संसदीय राजभाषा समिति

संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम, 1963 के अधीन वर्ष 1976 में किया गया था। यह उच्चाधिकार प्राप्त संसदीय समिति है। इसमें 30 संसद सदस्य हैं, 20 लोकसभा से और 10 राज्यसभा से। माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं। राजभाषा कार्य की प्रगति के निरीक्षण कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए इस समिति को तीन उप समितियों में विभाजित किया गया है।ये तीनों उपसमितियां अब तक 16,401 से अधिक कार्यालयों का निरीक्षण कर चुकी हैं और लगभग 882गणमान्य व्यक्तियों का मौखिक साक्ष्य भी ले चुकी हैं,जिनमें उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश,राज्यों के मुख्यमंत्री और राज्यपाल शामिल हैं।इसी कार्य के आधार पर समिति अबतक

तक अपने प्रतिवेदन के बारह खण्ड राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है। नौ खण्डों में की गई सिफारिशों पर राष्ट्रपति जी के आदेश हो गये हैं। इस समिति का मुख्य उद्देश्य सरकार के कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा करना है।

पहली उप समिति रक्षा-विदेश, शिक्षा, ग्रह, विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रालय तथा कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग **दूसरी उप समिति-** रेल- संचार- सूचना एवं प्रसारण- कृषि और सिंचाई मंत्रालय **तीसरी उप समिति** पेट्रोलियम- रसायन और उर्वरक मंत्रालय -इस्पात और खान मंत्रालय ऊर्जा मंत्रालय, वाणिज्य मंत्रालय- स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय और नागर विमानन मंत्रालय नौवहन और परिवहन मंत्रालय तथा विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग आदि।

****

दो वर्तमान का सत्य सरल,
सुंदर भविष्य के सपने दो
हिंदी है भारत की बोली
तो अपने आप पनपने दो

यह दुखड़ों का जंजाल नहीं,
लाखों मुखड़ों की भाषा है
थी अमर शहीदों की आशा,
अब जिंदों की अभिलाषा है
मेवा है इसकी सेवा में,
नयनों को कभी न झंपने दो
हिंदी है भारत की बोली
तो अपने आप पनपने दो

- गोपाल सिंह नेपाली

मैं हूँ फकीर

रजनीश दुबे "धरतीपुत्र"

मैं हूँ फकीर फनकारों का
मुझमें जन-गण का मन बहता।
ये बहकर कहता महफिल से
मुझमें भी अधिनायक है रहता।।

और सुना जुबां से जब मैने
इस अधिनायक की जय होते।
तो फ़िर ख्याल आया मन में
कि मेरे लिबास भी नये होते।।

माना मैं भारत का भाग्य नही
पर कहीं छिपा तो दाता है ।
जो गढ़ने बैठा किस्मत को
वो अन्तर्मन का विश्वविधाता है।।

मैं खुले विचारों से घूम-घूम
इस खुले गगन में भ्रमण करूं।
पंजाब से लेकर सिंधु तक
कल-कल धारा का श्रवण करूं।।

या गुजरात की मीठी बोली से
जीतूं दिल वीर मराठा का।
या बंगाल की कोकिल गीतों से
मन मोह लूँ उड़िया उत्कल का।।

मैं फकीर फ़िर चलूँ विंध्य से
जमुना के यश का सार लिये।
और आ बैठूं हिम के आंचल में
गंगाजल की बूंदें चार लिये ।।

मुझ फ़कीर पर तेरा ऋण है
तू तो सागर की लहरों सा दृढ़ है ।
फ़िर भी तुझको अर्पण करता
मुझ फकीर का जज्बा भी दृढ़ है।।

ए किसान की फसल के दाता
ए जवान के भाग्य - विधाता।
मेरा तुझसे बस एक ही नाता
मैं फ़कीर और तू प्रेम प्रदाता।।

मैं हूँ फकीर फनकारों का
मुझमें जन-गण का मन बहता।
ये बहकर कहता महफिल से
मुझमें भी अधिनायक है रहता।।

-वर्धमान टेक्सटाइल, नर्मदापुरम

ललक शिक्षा की

हिमांशु बावनकर

रमेश और मैं सही मायने में लंगोटिया यार हैं। बताऊँ कैसे? हम दोनों एक ही दिन एक ही सरकारी अस्पताल में पैदा हुए और हम दोनों की माँ में भी मित्रता थी। दोनों हमको गोद में लेकर खूब बात किया करती थी। जब चलना भी नहीं सीखे थे तबसे एक दूसरे के साथ खेलते आ रहे हैं। समय बीता और रमेश के परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। उसके पिताजी का आकस्मिक देहांत हो गया। घर का बड़ा लड़का होने के नाते रमेश ने घर की बागडोर अपने हाथों में ले ली।अपने पिताजी की तरह वह गांव का एक छोटा व्यापारी बन गया। वह अपने परिवार की ज़िम्मेदारियों के चलते ज़्यादा पढ़-लिख नही पाया पर कम उम्र से ही घर-परिवार की ज़िम्मेदरियों को बड़ी ही कुशलता के साथ निभाता आ रहा है। हाँ, उसे हमेशा यह मलाल रहता है कि वह ज़्यादा पढ़ा लिखा नही है। वह अपने आस-पास के साथियों और अपनी दुकान पर आने वाले ग्राहकों से कुछ न कुछ सीखने का प्रयास करता रहता है। साथ ही बच्चों के साथ कुछ समय अवश्य ही व्यतीत करता, उन्हें पढ़ने - लिखने के लिए हमेशा प्रोत्साहित करता रहता और पढ़ने लिखने की अहमियत के बारे बताता रहता है। वह बच्चों के लिए कुछ उपहार कलर, पेपर, पैंसिल भी दिया करता है, जिससे बच्चों के उत्साह में चार चाँद लग जाते और वे मन लगाकर पढ़ने लिखने का प्रयास करते। उसकी पढ़ाई- लिखाई के प्रति रूचि को देखकर ऐसा लगता ही नही है, कि वह ज़्यादा पढ़ा लिखा नही है। वह हमेशा यह सोचता कि उसकी शादी एक ऐसी लड़की से हो जो पढ़ी लिखी हो। पर उसे यह लगता था कि ऐसा क्यों होगा कि कोई पढ़ी लिखी लड़की एक पाँचवी पास लड़के से शादी करे। अब देखो भगवान की कृपा ऐसी कि उसकी शादी एक पास के गांव की ऐसी लड़की से तय हुई जो स्वयं शिक्षित थी, गाँव के बच्चों को मुफ्त में पढ़ाया भी करती थी। जब रिश्ते की बात चली तो लड़की रमेश की नेक दिली और शिक्षा के प्रति उसके रूझान को लेकर उससे प्रभावित हुई और कहते है ना जब आपके इरादे नेक हो तो पूरी कायनात अपकी मदद करती है। अब उसका मलाल कम हो गया है कि वह पढ़ा लिखा नही है। वह अपनी पत्नी से रोज़ कुछ न कुछ सीखता है और स्वंय को वह शिक्षित करने के लिए वह भरपूर मेहनत करता है। जिसमें उसकी पत्नी उसका पूरा साथ देती है और उसे प्रोत्साहित करती है। रमेश की पढ़ाई में रूचि इतनी बढ़ी कि उसने अपनी पत्नी की सहायता से दसवीं और बारहवी तक की यात्रा सफलता से पूर्ण की और इस साल उसने कॉलेज में दाखिला लिया है। रमेश की शिक्षा की ललक गाँव के अन्य स्कूली पास युवाओं को भी पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। रमेश उन लोगो के लिए प्रेरणा बन गया है जिनमें एक उम्र के कारण पढ़ने की ललक शान्त हो चुकी है।

"शिक्षा उम्र की मोहताज नही"

एकलव्य फाउंडेशन,भोपाल

हर इंसान यहाँ परेशान है

-विमलेश चन्द्र

हर इंसान यहाँ परेशान है और जो परेशान नहीं, वह इंसान नहीं भगवान है।
तो फिर इंसान होकर व्यस्त और मस्त रहने में क्या बुराई है??
जिसके पास रूपये ही रूपये है, उसके पास समय नहीं है।
जिसके पास समय ही समय है, उसके पास रूपये नहीं है।
जिसके पास खुशियाँ हैं, वह पैसों से गरीब है।
जिसके पास पैसे हैं, वह खुशियों से गरीब है।
जिसके पास सभी सुख सुविधाएँ हैं, वह अपनी ज़िंदगी से परेशान हो कर जीना नहीं चाहता है।
जिसके पास कोई सुख सुविधा नहीं है और सड़क पर भी रहने को मजबूर है, तो भी वह जीना चाहता है।
जिसके पास बच्चे हैं,आपसी लड़ाई में वह सोचता है कि बच्चे न होते तो अच्छा होता।
जिसके पास बच्चे नहीं हैं। वह बच्चों के लिए दर दर मंदिर, मस्जिद, अस्पताल में भटकता है।
जिसके पास अपना भरा पूरा परिवार है। वह आपसी लड़ाई में परिवार से परेशान है, और सोचता है कि सब अलग अलग या दूर रहते तो अच्छा होता।
जिसके परिवार या बच्चे अपने से दूर हैं, वह सोचता है कि काश मेरे बच्चे मेरे पास होते।
जिसके पास सच्चाई और ईमानदारी वाला रास्ता है, वह परेशान है।
जिसके पास गलत या भ्रष्ट रास्ता है, वह पूरी जिन्दगी इंज्वाय करते हुये अकूत सम्पत्ति बनाता है।
जिसके पास बड़े बड़े महल हैं, उनके महल में किलकारी नहीं गूँजती।
जिसके पास टूटी फूटी झोपड़ी है, उसके यहाँ दर्जनों बच्चे नंग धडंग भरे रहते हैं।
जिसके पास भीड़ भाड़ वाले शहरों में रहने विकल्प है, वह गाँव की तरफ भागना चाहता है।
जिसके पास गाँव में रहने का विकल्प है, वह शहर की तरफ भागना चाहता है।

वास्तव में यहाँ सब कुछ उल्टा पुल्टा और जटिल है।
हर इंसान यहाँ परेशान है और जो परेशान है वह ही असली इंसान है।
हम सभी लोग इस किसी न किसी कैटेगरी में आते ही हैं।

आम्रपाली रेजीडेंसी कालोनी,
वडोदरा, गुजरात

हिंदी भारत की अमरवाणी है, यह स्वतन्त्रता और संप्रभुता की गरिमा है।
-माखन लाल चतुर्वेदी

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।
-रविशंकर शुक्ल

ईश्वर चंद्र विद्यासागर

(साभार)

एक छोटा सा स्टेशन था, बहुत कम रेलगाड़ी ही वहाँ रुकती थी। शाम का समय था, अंधेरा हो रहा था। चारों ओर चिड़ियाँ चहक रहीं थी, उसी समय एक रेलगाड़ी छुक - छुक करती हुयी वहाँ रुकती हैं। रेलगाड़ी से एक व्यक्ति हाथ में अपना सूटकेस लिए बाहर निकलते हैं।

उस व्यक्ति का नाम था मनमोहन, वो स्टेशन पर खड़े होकर कुली को आवाज लगाने लगा।
लेकिन वहाँ आसपास कोई भी नजर नहीं आ रहा था, तभी स्टेशन मास्टर जी हाथ में लालटेन लेकर आये।
उन्होंने मनमोहन से कहा : यहाँ कोई कुली नहीं हैं, यहाँ बहुत कम गाड़ी रुकती हैं।
मास्टर ही इतना कह ही रहे थे तभी उनकी ओर एक व्यक्ति आया उसने मनमोहन का सूटकेस अपने कंधे पर रख लिया और कहा : आपको कहाँ जाना हैं चलिए।
स्टेशन मास्टर जी बहुत हैरान हुए वे कुछ कहने ही वाले थे तभी वह व्यक्ति कंधे पर सूटकेस लिए उन्हें इशारा कर देता हैं।
मनमोहन स्टेशन से बाहर निकले तो उस व्यक्ति ने पूछा : आपको कहाँ जाना हैं, साहब?
मनमोहन : मुझे ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी से मिलना हैं, सुना हैं उनका घर नजदीक ही हैं।
व्यक्ति : जी आपने ठीक कहा, चलिए में आपको ले चलता हूँ।
कुछ देर मनमोहन उस व्यक्ति के साथ चलते गये, वो व्यक्ति उन्हें रास्ते में स्टेशन और जगह के बारें में बताता गया, इस तरह रास्ता कैसे बीत गया कुछ पता नहीं चला।

वे ईश्वर चंद्र विद्यासागर के घर पहुँच गए, उस व्यक्ति ने हाथ पैर धोने के लिए पानी दिया और बैठने के लिए कुर्सी लेकर आये, मनमोहन हाथ पैर धोकर बैठे फिर उस व्यक्ति ने कहा : जी मनमोहन जी कहिये, मैं ईश्वर चंद्र विद्यासागर हूँ।

मनमोहन ने उनकी सादगी के बारे में सुना तो था, लेकिन आज मनमोहन से रहा नहीं गया, उसने ईश्वर चंद्र विद्यासागर के चरण पकड़ लिए, विद्यासागर ने मनमोहन को उठाया और गले से लगा लिया।

ऐसे थे समाज सुधारक ईश्वर चंद्र विद्यासागर, सादगी से रहने वाले और समाज के लिए हमेशा अच्छा सोचने वाले व्यक्ति इसलिए लोग आज भी उन्हें याद करते हैं।

"सफलता के लिए सीखने की तीव्रता बहुत महत्वपूर्ण है।"

\- **महात्मा गांधी**

"अपने हित से पहले, समाज और देश के हित को देखना ही एक विवेक युक्त सच्चे नागरिक का धर्म होता है"।

-ईश्वर चंद्र विद्यासागर

जब हम सत्ता में आएँगे

हिमांशु बावनकर

जब हम सत्ता में आएँगे।
शिक्षा की अलख की जगाएँगे।
ये ताना बाना साफ कर,
राह नई दिखलाएँगे।
जब हम सत्ता में आएँगे।

मंदिर मस्जिद के झगडों से ऊपर उठ
सबको आगे बढाएंगे,
राह सही दिखलाएँगे।
जब हम सत्ता में आएँगे।

एक नया भारत बनाएँगे।
दुनिया में परचम लहराएँगे।
जब हम सत्ता में आएँगे।

एक दिन हम विश्व गुरू बन जाएँगे।
जब हम सत्ता में आएँगे।
शिक्षा की अलख जगाएँगे।

एकलव्य फाउंडेशन भोपाल

''संसार में यदि कोई सर्वांगपूर्ण अक्षर है, तो देवनागरी के हैं''
-आइज़ेक पिटमैन

''जीवन का सबसे बड़ा सबक, अपनी कमजोरियों को स्वीकारना सिखाता है और उन्हें अपनी ताकत बनने का मौका देता है।''
-चाणक्य

बिदाई की दहलीज़

विमी घनेलू

ये जो बिदाई का जो वक्त होता है ना ,
दोनों के लिए हृदय-विदारक होता है।
इक वो हैं जो दहलीज़ के उस पार जाएंगे,
इक वो हैं जो इसी तरफ रह जाएंगे।

वो इक नयी दुनिया में जाते हुए,
आँखों में सपनों का मंजर लिए,
और इक ये हैं इस पार रोते हुए,
दिल में भावनाओं का बवंडर लिए।

वो हैं होंठो को दर्द से भींचते हुए,
आंसुओं से सपने धुंधले हैं उस पार,
ये हैं उनका आंचल बार बार खींचते हुए,।
बिछड़ने के दुख से रुंधा गला, इस पार।

आनेवाले कल के सपने सँजोती,
सपनों से चमकती आंखें उस पार,
उन्हीं आंखों को मुस्कुराहट देती हैं,
ये दो झूठी आंखें हैं इस पार।

बार बार मुड़कर देखते हैं वो,
कुछ ढूंढती-सी आंखें हैं, उस पार,
और पत्थर के बुत से खड़े मूक,
मुस्कुराते भी ना बने इस पार।

दिल टूट टूटकर बिखरता है,
ख्वाहिशों का संसार बुलाता उस पार
सपना भी तो अपनों को लूटता है,
अपना इक दामन छूटता है इस पार।

आंसू आंखों की दहलीज़ पर रुके हैं,
विदा करने आएं हैं, रह जाएंगे इस पार,
कदम दरवाज़े की दहलीज़ पर थमें हैं।

बाद में सभी रोएंगे दहलीज़-ओ-द्वार।

कभी गले लगकर कभी मूक व्यथा-से ,
भावनाओं का बांध बह जाएगा, इस पार,
पोंछ ली आंसू की लकीर हाथों से।
फिर भी आंसू थम न पाएंगे उस पार।

बाढ़ में अब दहलीज़ भीग रही है,
पर दोनों तरफ की पीड़ा भिन्न है,
जाने वाले दहलीज़ के पार हैं।
मन जाने प्रसन्न है या खिन्न है।

दहलीज़ के उस पार नयी राह है,
और इस पार बिछोह की कराह है।

मुख्य कार्यालय अधीक्षक,
प्र.मु.वा.प्र.कार्यालय

****

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

- जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।

- वाल्टर चेनिंग

राष्ट्रभाषा हिन्दी हो जाने पर भी हमारे व्यक्तित्व और सार्वजनिक जीवन पर विदेशी भाषा का प्रभुत्व अत्यंत गर्हित बात है।

- कमलापति त्रिपाठी

किताबें

-संकलन

किताबें झाँकती हैं बंद अलमारी के शीशों से
बड़ी हसरत से तकती हैं
महीनों अब मुलाक़ातें नहीं होतीं
जो शामें उन की सोहबत में कटा करती थीं,
अब अक्सर गुज़र जाती हैं कम्प्यूटर के पर्दों पर
बड़ी बेचैन रहती हैं किताबें
उन्हें अब नींद में चलने की आदत हो गई है
बड़ी हसरत से तकती हैं
जो क़द्रें वो सुनाती थीं
कि जिन के सेल कभी मरते नहीं थे
वो क़द्रें अब नज़र आती नहीं घर में
जो रिश्ते वो सुनाती थीं
वो सारे उधड़े उधड़े हैं
कोई सफ़्हा पलटता हूँ तो इक सिसकी निकलती है
कई लफ़्ज़ों के मअ'नी गिर पड़े हैं
बिना पत्तों के सूखे तुंड लगते हैं वो सब अल्फ़ाज़
जिन पर अब कोई मअ'नी नहीं उगते
बहुत सी इस्तेलाहें हैं
जो मिट्टी के सकोरों की तरह बिखरी पड़ी हैं
गिलासों ने उन्हें मतरूक कर डाला
ज़बाँ पर ज़ाइक़ा आता था जो सफ़्हे पलटने का
अब उँगली क्लिक करने से बस इक
झपकी गुज़रती है
बहुत कुछ तह-ब-तह खुलता चला जाता है पर्दे पर
किताबों से जो ज़ाती राब्ता था कट गया है
कभी सीने पे रख के लेट जाते थे
कभी गोदी में लेते थे
कभी घुटनों को अपने रेहल की सूरत बना कर

वो सारा इल्म तो मिलता रहेगा आइंदा भी
मगर वो जो किताबों में मिला करते थे सूखे फूल और
महके हुए रुकए
किताबें माँगने गिरने उठाने के बहाने रिश्ते बनते थे
उन का क्या होगा
वो शायद अब नहीं होंगे! ?

-गुलज़ार

****

हित वचन-नहीं तूने माना,मैत्री का मूल्य न पहचाना,
तो ले, मैं भी अब जाता हूँ,अन्तिम संकल्प सुनाता हूँ।
याचना नहीं, अब रण होगा,जीवन जय या मरण होगा।

-रामधारी सिंह 'दिनकर'

****

पड़ने लगती है पियूष की शिर पर धारा
हो जाता है रुचिर ज्योति मय लोचन-तारा
बर बिनोद की लहर हृदय में है लहराती
कुछ बिजली सी दौड़ सब नसों में है जाती
आते ही मुख पर अति सुखद जिसका पावन नाम ही
इक्कीस कोटि-जन-पूजिता हिन्दी भाषा है वही

जिसने जग में जन्म दिया औ पोसा, पाला
जिसने यक यक लहू बूँद में जीवन डाला
उस माता के शुचि मुख से जो भाषा सीखी
उसके उर से लग जिसकी मधुराई चीखी
जिसके तुतला कर कथन से सुधाधार घर में बही
क्या उस भाषा का मोह कुछ हम लोगों को है नहीं

- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

डॉ. धर्मवीर भारती : जयंती विशेष

-दीपा मंद्यान

डॉ. धर्मवीर भारती 20वीं शताब्दी के आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार, अनुवादक, निबंधकार, सामाजिक विचारक, स्वतंत्रता सेनानी और पत्रकार थे। इन्होंने साप्ताहिक पत्रिका 'संगम'और 'धर्मयुग'का संपादन भी किया है।

डॉ. धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर, 1926 को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (इलाहाबाद) के अतरसुइया मोहल्ले में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री चिरंजीलाल तथा माता का नाम चंदा देवी था। बचपन में ही इनकी माता का स्वर्गवास हो गया था। कुछ समय बाद ही इनके पिता की भी मृत्यु हो गई। इनकी एक बहन थी, जिनका नाम डॉक्टर वीरबाला था।

धर्मवीर भारती ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी विषय में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और फिर पी.एच.डी की उपाधि भी हासिल की तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी विभाग में प्राध्यापक बने।

इन्हें नई कहानी साहित्यिक आंदोलन के अग्रदूतों में से एक माना जाता है। इनके लेखन में मानवीय भावनाओं की गहरी समझ झलकती है। इनकी प्रसिद्ध कृति 1949 में प्रकाशित उपन्यास 'गुनाहों का देवता' है। यह एक प्रेम कहानी है और चंदर और सुधा तथा सुधा के परिवार के सदस्यों के ईर्द-गिर्द कहानी घूमती है। कहानी पढ़ते समय इस कहानी के पात्र मानो हमारे सामने सजीव हो जाते हैं। यह उपन्यास सदाबहार उपन्यास है, जो हिंदी साहित्य जगत में मील का पत्थर है।

डॉ. धर्मवीर भारती एक कुशल कवि भी थे। उनके कुछ उल्लेखनीय कविता संग्रहों में सूरज का सातवां घोड़ा और अंधा युग विशेष है। इन्होंने कई वर्षों तक हिंदी साहित्यिक पत्रिका 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में संपादक के रूप में भी कार्य किया है।

डॉ. धर्मवीर भारती जी को साहित्य के क्षेत्र में कई पुरस्कारों का सम्मान मिला है । साहित्यिक उपलब्धियों के लिए वर्ष 1972 में भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक 'पद्मश्री' का सम्मान मिला है ।

डॉ. धर्मवीर भारती की भाषा सरल, सुबोध है। इनकी लेखनी में संस्कृत के शब्द अधिक पाए जाते हैं। इनकी भाषा परिष्कृत एवं परिमार्जित खड़ी बोली है। मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से भाषा में गति आ गई है।

डॉ. धर्मवीर भारती की कुछ कृतियां और कहानी संग्रह चांद और टूटे हुए लोग,मुर्दों का गांव, स्वर्ग और पृथ्वी, बंद गली का आखरी मकान, सांस की कलम से । काव्य संग्रह – ठण्डा लोहा, कनुप्रिया, अंधायुग, सपना अभी-भी, आधान्त। उपन्यास - गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा, प्रारंभ व समापन

। निबंध संग्रह- ठेले पर हिमालय, कहानी-अनकहानी, पश्यन्ती । नाटक एवं एकांकी संग्रह – नदी प्यासी थी, नीली झील । आलोचना प्रगतिवादी एक समीक्षा, मानव मूल्य और साहित्य अनुवाद –देशांतर ।

डॉ. धर्मवीर भारती की मृत्यु 4 सितंबर 1997 को मुंबई में हुई। माना कि आज हमारे बीच डॉ. धर्मवीर भारती नहीं है पर उनकी रचनाओं में वे सदैव जीवंत है।

डॉ. धर्मवीर भारती के पूर्वज पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शाहजहांपुर जिले के खुहागंज नामक कसबे के जमींदार थे।

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय)
मध्य रेल, मुंबई छशिमट

****

आगामी अंक से रेल सुरभि में हम एक नवीन 'स्थायी स्तंभ' की शुरुआत करने जा रहे हैं-

"आपकी राय"

इस स्तंभ के माध्यम से आप हमे 'रेल सुरभि' से जुड़े अपने सुझाव व मुद्रित रचनाओं पर अपना विश्लेषण और भावनाएं व्यक्त कर सकते हैं। हमें आपकी राय अवश्य भेजें, आपके अमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

गीत की कहानी और कहानी का गीत
यानि कि काली औरत का ख़्वाब

- **विपिन पवार**

जब वी मेट, सोचा न था, मेरे ब्रदर की दुल्हन, ए वेडनेसडे, दे दनादन, थोड़ी लाइफ थोड़ा मैजिक, लव आजकल, अज़ब प्रेम की ग़जब कहानी, शब्द जैसी सफल फिल्मों के गीतकार इरशाद कामिल की पुस्तक है – "काली औरत का ख़्वाब"।

पुस्तक की विधा न तो केवल गद्य है और न ही केवल पद्य क्योंकि बॉम्बे आने के बाद ही इरशाद कामिल को पता चलता है कि फिल्मों की कहानी में गाने होते हैं, ये तो सब जानते हैं। हर गाने के पीछे एक कहानी होती है ये सब नहीं जानते। बस, सड़कों की धूल फाँकते-फाँकते वह गाने लिखने लगा और कहानियाँ बनने लगी।

प्रस्तुत पुस्तक में कहानियां हैं, गीत हैं, चित्र हैं, इरशाद की सुंदर हस्तलिपि में लिखित डायरी के मूल पृष्ठ हैं। पुस्तक की भाषा काफी सधी हुई है क्योंकि इरशाद को परिवार से मिली उर्दू, स्कूल से पाई हिंदी और समाज से सीखी पंजाबी। इसलिए इरशाद की भाषा पर पकड़ और समझ इतनी पुख़्ता, पक्की और ठेठ है। इसका अन्दाजा आप उसकी ग़जलों से, उसकी कविताओं और ख़ासकर फ़िल्म के गीतों से लगा सकते हैं।

आजकल के भारतीय फिल्मी गीत आमतौर पर अपने द्विअर्थी संवादों एवं अश्लीलता के चलते सभ्य समाज से बहिष्कृत हैं लेकिन इरशाद की शायरी में इसका लेशमात्र भी प्रभाव नहीं देखा जा सकता –

बातें लिए मैं रूह की
चौखट पे खड़ा हूँ !
तू जिस्म के मकान से
बाहर नहीं आता !!

जहाँ चर्चित एवं लोकप्रिय फिल्म जब वी मेट के गीतकार इरशाद प्रसिद्ध गीत मौजां ही मौजां'के पीछे की कहानी विस्तार से बताते हैं वहीं गंभीरता एवं दार्शनिकता की परतों के नीचे हमें कवि की सादगी एवं सरलता भी दिखाई देती हैं –

हम सादा तबियत लोगों का
क्या सजना सँवरना साहिब जी !
इन राख सरीखे शोलों का
क्या जलना बुझना साहिब जी !!

हमारी फिल्मों में प्राय: प्रेमी-प्रेमिका पर गीत लिखे जाते हैं, उनका बखूबी से चित्रीकरण होता है, वे सराहे भी खूब जाते हैं लेकिन इरशाद ने फिल्म "शब्द" में पति-पत्नी के प्रेम पर भी गीत लिख दिया –

"लो शुरू अब चाहतों का सिलसिला हो रहा है
मिट रही है दूरियां और फासला खो रहा है
हो रही है बात कुछ ऐसी जिसमें
शब्द गुम हैं, अर्थ मतलब चुपके से खो रहा है।''

और

"बड़े शहर में ख्वा़ब खड़े हैं

कदम-कदम ....

ख़्वाब की सूली कौन चढ़े हैं

कसम से हम तुम ....।''

इरशाद की भाषा पर स्वाभाविक रूप से मुंबईया हिंदी का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। सबकी वाट लग गई। (पृ. 58)

गद्य एवं पद्य दोनों में उनका बिम्ब विधान अनूठा है, प्रतीक एवं उपमान गढ़े हुए एवं कृत्रिम नहीं लगते। उन्होंने पुस्तक में कुछ बहुत सुंदर भाषागत प्रयोग किए हैं –

"शायरी पे उसकी भी पकड़ मजबूत थी और ढ़ीला मैं भी नहीं था।''(पृ.46)

"मैंने फटाफट दो चपातियाँ उधेड़ी।'' (पृ.106)

"विचार की अँगीठी पर रोज एक प्रोजेक्ट की हांडी चढ़ती तो थी।'' (पृ.121)

"मेरी खुशी का ठिकाना रहना मुश्किल था............ राहत की सांस का खजाना मिल गया।'' (पृ.148)

"काले बूट सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। बूट मेरे थे।'' (पृ.157)

"करवट-करवट काटी हुई रात दिन से शर्माती हुई अपना आंचल समेट रही थी।'' (पृ.159)

मुंबई की मायानगरी में अपने पैर जमाना लगभग नामुमकिन होता है। सैकड़ों लोग प्रतिदिन अपनी किस्मत आजमाने यहां आते हैं और गुमनामी के अंधेरों में खो जाते हैं। ऐसे ही "स्ट्रगलरो'' के लिए इरशाद कितनी काम की बात कितनी आसानी से कह जाते हैं :-

"सफर जितना लंबा हो, इरादा उतना मजबूत होना चाहिए और मंजिल की उम्मीद उससे भी पुख़्ता। इस तरह के फ़लसफ़े हमेशा बाद में समझ में आते हैं।''

कहते है कि जीवन में प्रगति करने के लिए पहले हमें सपने देखने होंगे लेकिन इरशाद उससे भी आगे की बात कहते हैं-

ख़्वाब देखना जितना ज़रूरी है, उन्हें पूरा करने की कोशिश करना उससे भी ज्यादा ज़रूरी।''

जीवन की धुरी प्रेम है, इसे इरशाद बहुत अच्छी तरह से जानते हैं।–

"कामिल करते जाइये प्रीत रीत की बात

चाहे प्रीतम छोड़ दे प्रीत न छोड़े साथ''

पुस्तक में एक रोचक एवं प्रेरणास्पद प्रसंग है, जिसमें टांग टूटने पर इरशाद अपने भाई के साथ डॉक्टर के पास जाते हैं और भाई फिल्मी गीतकार के रूप में इरशाद का परिचय देते हैं। डॉक्टर को जब 'जब वी मेट' के गीतकार का परिचय हो जाता है तो वह कहता है कि आप तो बहुत बड़े 'समाज सेवक' हैं क्योंकि अच्छे गाने न बनें तो फिर क्या रह जायेगा जिंदगी में?''

पुस्तक में वर्तनी की अशुद्धियां हैं, जिनके चलते कहीं-कहीं पर अर्थ का अनर्थ हो गया है -

दिन अपनी गठरी समेत कर (पृ.155) (समेट कर होना चाहिए था)

एक दूसरी को देखने लगे (पृ.161) (दूसरे होना चाहिए था)

मेरे बड़े भाई सरीखा (पृ.221) (सरीखे होना चाहिए था)

लोग बनाने हैं (पृ.241) (बनाते हैं होना चाहिए था)

इन अशुद्धियों से यदि बचा जाता, तो बेहतर होता।

बहरहाल, इरशाद कामिल ने बालीवुड के अन्य संघर्षरत युवाओं की तरह वह ख़्वाब देखा था कि वह काली औरत"'' कम से कम एक बार उनके आगोश में आ जाए और यह ख़्वाब फिल्मों में

अपनी किस्मत आजमाने वाला हर युवा देखता हैं। वह "काली औरत" कौन है? इसका पता तो आपको पुस्तक पढ़ने के बाद ही चलेगा। लेकिन मैं आपको इतना बताते चलूँ कि एक दिन वह "काली औरत" उनकी हो गई। और उसके बाद ही उन्होंने लिखा-

"ख़्वाबों की दहलीजें कदमों को
अब मेरे हैं चूमती !
पहले था मैं पीछे, ये दुनिया
अब पीछे है घूमती !!"

हमारे फिल्मी गीतों के बारे में सब कुछ जानने के इच्छुक पाठकों के लिए यह एक बेहद ज़रूरी किताब है।

काली औरत का ख़्वाब

लेखक	:- इरशाद कामिल
प्रकाशक	:- वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
संस्करण	:- द्वितीय
मूल्य	:- 425 रुपए
पृष्ठ संख्या	:- 252

- पूर्व उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
मध्य रेल, मुंबई

"सपने वे नहीं, जो आप नींद में देखते हैं, सपने तो वे है, जो आपको सोने नहीं देते। "

"संकल्प वह शक्ति है जो हमें हमारी सभी निराशाओं और बाधाओं से पार पाती है। यह हमें अपनी इच्छाशक्ति बनाने में मदद करता है जो सफलता का आधार है।"

:- डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम

मराठी खंड

****

अखेर कमाई

(साभार(

मध्यरात्र उलटल्यावर
शहरातील पाच पुतळे
एका चौथऱ्यावर बसले
आणि टिपं गाळू लागले .
ज्योतिबा म्हणाले ,शेवटी मी झालो
फ़क्त माळ्यांचा.
शिवाजीराजे म्हणाले ,
मी फ़क्त मराठ्यांचा.
आंबेडकर म्हणाले ,
मी फ़क्त बौद्धांचा.
टिळक उद्गारले ,
मी तर फ़क्त
चित्पावन ब्राम्हणांचा.
गांधींनी गळ्यातला गहिवर आवरला
आणि ते म्हणाले ,
तरी तुम्ही भाग्यवान.
एकेक जातजमात तरी
तुमच्या पाठीशी आहे.
माझ्या पाठीशी मात्र
फ़क्त सरकारी कचेऱ्यातील भिंती !

कुसुमाग्रज-

पावुल पुढे टाकु की मागे?

-अंजली महेश तेरवेणकर

नवीन वळणावर आयुष्य उभे,
कळत नाही,
पावुल पुढे टाकु की मागे.

पुढची वाट अस्पष्टसारी,
ढगा पलीकडची दूनियाच न्यारी.

मागे मात्र सूख आहे,
जुन्या नात्यांची ऊब आहे.

आशा वळणावर मन थबकले,
कळत नाही
पाऊल पुढे टाकु की मागे.

****

रस्त्याला महापुरुषांचे नाव द्यायला

सर्वांमध्ये चढाओढ दिसते,

परंतु महापुरुषांनी दाखवलेल्या

रस्त्यावरून कोणालाच चालायचे नसते.

.

महादेवी वर्मा

सादर नमन
जन्म : 26.03.1907
मृत्यु : 11.09.1987

अतीत के चलचित्र महादेवी वर्मा द्वारा रचित एक रेखाचित्र है। इसमें लेखिका हमारा परिचय रामा, भाभी, बिन्दा, सबिया, बिट्टो, बालिका माँ, घीसा, अभागी स्त्री, अलोपी, बबलू तथा अलोपा इन ग्यारह चरित्रों से करवाती हैं। सभी रेखा-चित्रों को उन्होंने अपने जीवन से ही लिया है, इसीलिए इनमें उनके अपने जीवन की विविध घटनाओं तथा चरित्र के विभिन्न पहलुओं का प्रत्यारोपण अनायास ही हुआ है। उन्होंने अनुभूत सत्यों को जस-का-तस अंकित किया है।